प्रीति की प्रीत में

कविता संग्रह

डॉ. भारती वर्मा 'बौड़ाई'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कवर फोटो- उर्वशी बौड़ाई शर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

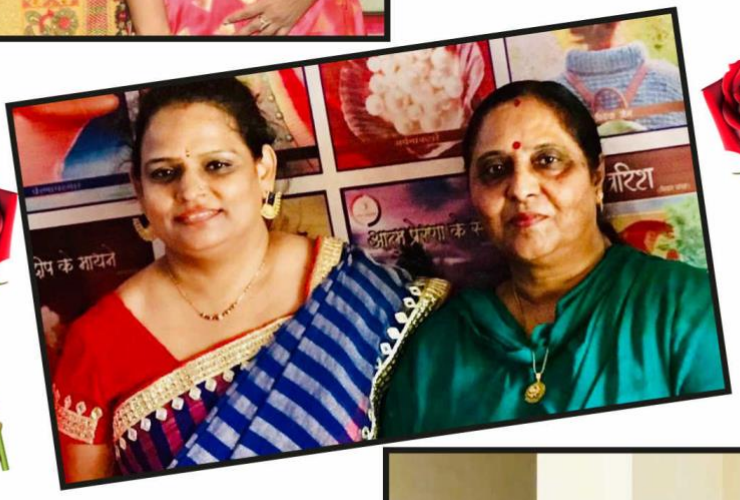

प्रीति की प्रीत में

(कविता संग्रह)

कमलवीथि पुष्प - 17

डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश - 481331

Antra ShabdShakti Prakeshan

संपादक- प्रीति समकित सुराना

कवर चित्र- **उर्वशी बौड़ाई शर्मा**

कमलवीथि पुष्प- 17

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9009423393

ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**

वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**

प्रथम संस्करण- 2025, **डॉ० भारती वर्मा बौड़ाई**

मूल्य- 250.00 रूपये

मुद्रक- सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY Dr. BHARTI VERMA BOURAI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

शब्दों की यात्रा में साथ चली हो तुम
साहस बन गया साथ जानती हो तुम!

प्रिय प्रीति और समकित सुराना जी को सप्रेम

भूमिका

प्रिय प्रीति और समकित सुराना जी को

कुछ कहना है....!

जिस तरह का स्वभाव ईश्वर से मुझे मिला है उसके चलते अपने में गुम अधिक रहती हूँ परिचितों से भी संवाद बहुत कुछ नपा-तुला सा ही रहता है क्योंकि उनकी बातों के विषय भी मेरी रूचि से मेल नहीं खाते। सम्बन्धी तो सम्बन्धी ही होते हैं उनके सम्बन्ध निभाने की उनकी सीमाओं में भी अपने को थोड़ा मिसफिट ही पाती हूँ। इसलिए जब कभी सोचने का उपक्रम करती हूँ कि मेरे कितने मित्र हैं जिनसे अपने मन का सुख-दुख साझा कर सकती हूँ, जिनसे फोन पर देर तक बतिया सकती हूँ तो बस एक नाम उभर कर आता है। ऐसे ही कौन मेरे हृदय के बहुत निकट है, कौन मेरी जीवन और कर्म यात्रा में एक प्रेरणा और शक्ति बन कर साथ चल रहा है तो माता-पिता के बाद जो दो-चार नाम मेरे मन में जुगनू की तरह जब-तब चमकते रहते हैं उनमें एक नाम मेरी प्रिय प्रीति का है जिसके अदम्य जीवट, जिजीविषा, विपरीत और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कुछ न कुछ नया करते और करवाते रहने की इच्छा को देख कर मैंने उन्हें आयरन लेडी कहा है और मुझे बहुत प्रसन्नता होती है जब उनके परिचित-मित्र भी उन्हें इस विशेषण से पुकारते हैं।

अपने कुछ ऐसे ही अपनों के लिए उनके जीवन के विशेष अवसरों पर कुछ न कुछ लिख कर उन्हें भेजना मुझे बहुत अच्छा लगता है। ऐसा करना मेरे मन को बहुत प्रसन्नता और संतोष प्रदान करता है और अपने आराध्य की अर्चना करने के समान प्रतीत होता है। तो बस इसी तरह कभी जन्मदिन पर, विवाह जयंती पर, कभी

अन्तरा की सफलता पर, कभी निराशा के क्षणों में तो कभी उनके अस्वस्थ होने पर सांत्वना-सलाह देते हुए, उनके प्रति अपनी भावनाएँ प्रकट करते हुए कुछ न कुछ लिख कर प्रीति को भेजती रहती थी। जब प्रतिक्रिया में अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में से समय निकाल कर प्रत्युत्तर देती थी तो मुझे बहुत अच्छा लगता था।

तो उन्हीं कुछ लिखे हुए को समेट कर एक पुस्तक का रूप देते हुए अपनी ओर से एक छोटा सा उपहार प्रीति को देने का मेरा यह प्रयास भर है। आशा और विश्वास दोनों हैं कि यह प्रीति के साथ समकित जी, उनके बच्चों तन्मय, जयति और जैनम को भी पसंद आएगा।

प्रीति और अन्तरा एक दूसरे के पर्याय हैं, दोनों को अलग करके देख पाना कठिन है। इसलिए अन्तरा पर लिखी दो-तीन कविताएँ भी मैंने प्रीति पर लिखी कविताओं के साथ इस पुस्तक में रखी हैं। दो लेख...जो प्रीति के व्यक्तित्व की विशेषताओं को उभारते हैं वे अंत में हैं उन्हें परिशिष्ट के रूप में देखा जा सकता है।

प्रीति पर पुस्तक प्रीति के अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से ही प्रकाशित होना मेरा और इस पुस्तक का सौभाग्य है।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

जन्माष्टमी 29-08-24

अनुक्रमणिका

1.	कुछ ऐसी ही है न आयरन लेडी प्रीति सुराना....	9-10
2.	अन्तरा शब्दशक्ति	11
3.	एक साल बेमिसाल	12
4.	नमन है	13-14
5.	सुनो प्रीति की अन्तरा	15-16
6.	रिश्ते प्रीत के	17
7.	दोस्ती के रंग	18
8.	वारासिवनी में रहती है	19-20
9.	योद्धा	21-22
10.	बस शर्त यही है	23-24
11.	अप्रतिम अध्याय	25
12.	तुम्हारा जीवन	26-27
13.	सौभाग्य मेरा	28
14.	कुछ विश्राम कर लिया न!	29-30
15.	प्रीति से सीखें	31-32
16.	अंतर्मन की गहराइयों से	33-34
17.	जोड़ते रिश्तों की कड़ियाँ	35
18.	उपलब्धियाँ	36
19.	कुछ तो बात है	37-38
20.	विविध रंगों से	39
21.	झोंके	40
22.	दिखी तुम	41
23.	प्रेम का मौसम	42
24.	कैसी हो	43-44
25.	सदानीरा हो तुम	45

परिशिष्ट

1. ऊर्जा का अक्षय भंडार :: प्रीति सुराना 46-47
2. प्रीति सुराना का वारासिवनी से दिल्ली तक का सफर 48-52
3. अन्तरा शब्दशक्ति के साथ मेरा अनुभव 53-56

कुछ ऐसी ही है न आयरन लेडी प्रीति सुराना

•• सपने देखना, उन्हें पूरा करना और फिर एक नया सपना देखना।

•• सृजन जिसके लिए संजीवनी औषधि है।

•• इनके पास श्री कृष्ण जैसे अनन्य सारथी के रूप में समकित जी का बिना शर्त प्रेम और साथ प्रीति की यात्रा का एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली स्तंभ है।

•• अपने तीनों बच्चों को शिक्षा के साथ प्रेम, स्नेह, आध्यात्मिकता, आदर-सम्मान, आतिथ्य, सेवा, देशभक्ति आदि अच्छे संस्कारों से संस्कारित करके सुयोग्य नागरिक बनाना इनकी सबसे बड़ी पूँजी है।

•• दिन हो या रात... किसी भी समय अतिथि के आतिथ्य के लिए इनका घर सदा खुला रहता है।

•• अन्तरा से जुड़े रचनाकारों को समय-समय पर सृजन से जुड़े सरप्राइज देना बहुत अच्छा लगता है।

•• वादा करके उसे पूरा करना इन्हें औरों से विशिष्ट बनाता है।

•• जो अपना बन गया, जो मित्र बन गया... वह रिश्ता अटूट है इनके लिए।

•• ध्वनि की प्रतिध्वनि मिलने में भले ही थोड़ा विलम्ब हो जाए पर मिलती अवश्य है।

•• कोई भी प्रतिकूल परिस्थिति इनके साहस को तोड़ नहीं सकती बल्कि निखार कर नए रूप में सामने लाती है।

•• ना आराम करती है ना करने देती है।

•• जीवन के हर पल को उसके हर रंग-रूप में जीने की चाहत रखती है।

•• लेखनी को माँ सरस्वती का ऐसा वरदान प्राप्त है कि उससे जो लिखा जाता है वह सबको अपने मन की बात लगती है।

•• सकारात्मकता का पुंज है प्रीति सुराना! सतत कुछ न कुछ नया करते रहने के विचारों से ओतप्रोत कुछ न कुछ नया धमाका करती ही रहती है।

•• निराश होकर ठहरना तो उसने सीखा ही नहीं।

•• कभी-कभी तो मुझे लगता है कि वह सोते-जागते हुए अन्तरा परिवार के हर सदस्य के हृदय और मस्तिष्क के द्वार खटखटा कर उनके निराशा के कोहरे को भेदते हुए उन्हें आशा की ओर ले आती है।

•• वह कहती भी है कि अन्तरा और उसके रचनाकारों को निराशा और अवसाद मैच नहीं करते।

****

१- अन्तरा शब्दशक्ति

देखा मैंने
असंख्य जुगनुओं को
अपनी गहरी आँखों में
जतन से समेटे/सहेजे
प्रीति को
जो कभी न थकती
लेकर आई
हम सबके लिए
अन्तरा शब्दशक्ति!
आज बनी है
सबका साहस
बनी लेखनी
अन्तरा शब्दशक्ति!
जो परिवार भी है
सृजन का स्थल भी
जहाँ प्रतियोगिताएँ हैं
सरप्राइज भी
जहाँ प्यार/स्नेह भी है
अपनापन/सम्मान भी
तो बताओ
हम क्यों न प्यार करें तुम्हें
अन्तरा शब्दशक्ति!

२- एक साल बेमिसाल

ईर्ष्या का थामे हाथ सवाल करने वाले
जहाँ खड़े हैं बस वहीं खड़े रह जाते हैं,
उन्हें अनसुना कर अपना काम करने वाले
दिलों में बस, नया संसार रच जाते हैं।
कुछ ऐसी ही जिद्दी, लगन में मगन है प्रीति
समय को जैसे अपने हिसाब से चलाती है
समकित और बच्चों का साथ पाकर
अन्तरा को नित नई ऊँचाइयाँ देना चाहती है
चलो आज मिलकर दें अशेष बधाइयाँ सभी
एक साल बेमिसाल पूरा हुआ है अभी-अभी।

३- नमन है

नमन है
अंतरा सारथियों के
अतुलनीय श्रम को
और अद्‌वितीय कर्म को,
हर बार
जब ये लगता है
हो गया बहुत
अब और क्या होगा,
तभी
आ धमकता है
फिर कुछ नया सा
जुट जाते हैं
जुड़ते-जोड़ते जाते हैं
ले लेता है आकार
नये रंगों के साथ
एक नया काम..
होने जा रहा
भोपाल की धरा पर
पुनः एक
एक अनूठा संगम
अंतरा प्रेमियों, सृजकों का
अगस्त चार को,
जहाँ

अंतरा के
इतिहास का
दूसरा अनन्य अध्याय
लिखा जायेगा,
फिर उसके बाद क्या?
देखना
बस, थोड़ा सा रुकते ही
कुछ नया आयेगा
जो अपने साथ-साथ
सबको असाधारण
बनाता जायेगा।

४- सुनो प्रीति की अन्तरा!

सुनो
प्रीति की अन्तरा!
जब से तुम
मेरे जीवन में आई हो
होली के रंग
चतुर्दिक बिखर गए हैं
असंख्य सतरंगी धनक
खिले दिखाई देते हैं
उदासी/ एकाकीपन के रंग
धूमिल हो गए
प्रेम/ स्नेह/ एकता/ सौहार्द के रंगों ने
रंग दिया है तन-मन,
कितना बड़ा हो गया
हमारा यह परिवार
जिसकी बागडोर
मुखिया प्रीति/ समकित के
मजबूत हाथों में थमी है
कीर्ति/ पिंकी/ अदिति/ ब्रजेश हैं
परिवार के दाहिने हाथ
तन्मय/ जयति/ जैनम हैं
इस परिवार का सुनहरा कल,
सृजन के रंग
नित्य बिखरते हैं
तो मनती हैं अप्रतिम होली!
कुछ आते हैं रोज यहाँ
छिड़कते हैं शब्दों से

रंग उल्लास के
और कुछ जो उलझे हैं
बहुमुखी परेशानियों में
मन से रहते हैं सदा यहाँ
पर शब्दों का छिड़काव करने
कभी-कभी आ पाते है,
जानती हूँ
तुम्हें बहुत बुरा लगता है अन्तरा!
पर सच मानो
तुम्हारे पास आने को
मन सभी का कलपता है
तुमसे मिले बिना
मन कहाँ लगता है!
बस जब भी तुम
कुछ करने को कहती हो
तो खिंचे चले आते हैं
इसी के सहारे ही तो
हम तुमसे अपना
ये अटूट नाता निभाते हैं,
इसी तरह
सृजन के मनभावन रंगों में
भीगने/ सराबोर करने
हमें बुलाती रहना
अपनी होली तो रोज मनेगी
बस यूँ ही गले लगाती रहना
मेरी प्यारी प्यारी
हम सबकी न्यारी अन्तरा!

५- रिश्ते प्रीत के

रिश्ते प्रीत के कभी टूटते नहीं
रंग इसके कभी भी छूटते नहीं,
भले मिल न पायें कई दिनों तक
रंग पक्के हैं पानी से धुलते नहीं।
प्रीति की प्रीत की जंजीर में बंधे
सोचते हर पल उसी के बारे में,
अन्तरा शब्दशक्ति सखी है ऐसी
कह पाते इसे अपने मन की सभी।
जब तक रहेंगे प्राण हमारे तन में
ये रिश्ता रहेगा सदा सबके मन में,
प्रीति और अन्तरा हैं दोनों एक ही
इसलिए प्रीत भी दोनों से एक सी।
प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष इसे मिलने
स्वयमेव सब यूँ ही खिंचे आयेंगे,
वर्ष पर वर्ष ऐसे ही आते जायेंगे
हम इसी तरह साथ चलते जायेंगे।

६- दोस्ती के रंग

रिश्तों के रंग
जब भी बिखरे
जमीं पर
मैंने सदा चुने
दोस्ती के रंग
जो किसी भी रिश्ते में हो
बेरंग नहीं होते कभी.....!
दोस्ती का रंग ही तो
बनाता हर रिश्ते को
चमकदार,
तोड़ता है दीवारें
औपचारिकताओं की,
भरता बेखुदी मन में
कि बड़े-बड़े काम हो जाते सुगम
असंभव लगने वाले भी,
दोस्ती
आशीर्वाद गुरु का,
दोस्ती
प्रकृति से मिली
ताजी हवा का झोंका,
दोस्ती
मार्गदर्शन अपनों का,
जिसे मिल जाये यह दोस्ती
बने वरदान अनमोल जीवन का...!!!!!

७- वारासिवनी में रहती है

जीवन को
उसके हर रूप में
मुक्त हृदय से
भरपूर जीती है,
रिश्तों की गठरियाँ
प्राण पण से सहेज कर चलती है,
दर्द दूर-दूर तक
दिखता नहीं इसका
कुछ निराले ही ढंग से
जीवन बसर करती है,
कभी अकेले
कभी साथ बैठ कर
नित नवीन सपने बुनती है
उन्हीं में से
चुन कर लक्ष्य कुछ
संगी-साथियों संग पूरा करने
अदम्य जोश लिए चल पड़ती है
नहीं जानती
थोड़ा सा विश्राम करना भी,
काम ही
भरता है उसमें
बेहिसाब ऊर्जा और जोश
इसी के चलते

बढ़ता रहता है इसके
मित्रों/अपनों/सम्बन्धियों का प्रेम-संसार,
नहीं कोई
इसके लिए पराया
मानव हो या पशु
सभी इसके अपने हैं
इन्हीं में जीते-बसते
आकार लेते रहते हैं सपने,
हिन्दी बसी मन-प्राणों में
इसकी समर्पित साधिका है
समाज के लिए
कुछ भी करने को तत्पर
काम की जुनूनी आराधिका है,
अपने प्रीति नाम को
सार्थक करती सबको
प्रीत बाँटती रहती है
प्रेम के कई रिश्तों में बंधी
सफलता के नए कीर्तिमान गढ़ती
एक आयरन लेडी
वारासिवनी में रहती है।

८- योद्धा

एक योद्धा की तरह
परिवार को अपने में समेटे
अपने अन्तरा के
असंख्य सैनिकों के साथ
नई-नई चुनौतियाँ को
आमंत्रित करती हुई
जीवन समर में युद्धरत है
निर्भय होकर
कर्मशील बने रहने का
मूल मंत्र देते हुए,
जाने कौन सी मिट्टी से
गढ़ा है इसे
अनूठे शिल्पकार ने
कि कोई बाधा
तोड़ नहीं पाती
बल्कि दुगुने उत्साह से
परिपूरित कर जाती है
तभी तो यह नए
आयाम गढ़ती जाती है
खाती रहती है
अपनों/शुभचिंतकों की
नित्य खूब सारी डाँट,
पर अपने वाक् कौशल से

समझा-बुझा कर
उन्हें भी कर लेती है तैयार
अपने साथ चलने के लिए,
यही जीवट
यही जिजीविषा
इसके लिए औषधि है
जीवन समर में युद्धरत
रहने के लिए।

९- बस शर्त यही है

सदा किए
पूरी बराबरी से
चुनौतियों से दो-दो हाथ
हर मुश्किल में
कदम से कदम मिला
रहा जीवनसाथी,बच्चों का साथ
अपने/पराए
परिचित/अपरिचित
मित्र/सम्बन्धी सब रहते हों पास
उसका भला
ये बीमारियाँ
क्या बिगाड़ पाएँगी
तुम्हारी अटूट
जिजीविषा/अदम्य साहस
शौर्य को देख उल्टे मुँह लौट जाएँगी
बस शर्त यही है
तुम कभी हिम्मत न हारना
जो आए रास्ते में
बाधाएँ/चुनौतियाँ/रोग भी
अपना अटूट साहस उन पर वारना
कोई बाधा
तुम्हारा मार्ग रोक सकती नहीं
कोई रुकावट

तुम्हें कहीं भी टोक सकती नहीं
परीक्षाएँ हैं
ये तो इस जीवन की
इन पर खरा उतरने की
आयरन लेडी ने करी पूरी तैयारी है
तभी तो ये
बाधाएँ/चुनौतियाँ
हर बार अपना सा मुँह लिए हारी हैं
आ जाएँ
भले ही कितनी भी बार यें
जिसने गिर कर उठना
चलना/लड़ना सीख लिया है
नहीं रोक सकता है कोई मार्ग उसका
अब भली-भाँति ये जानती हैं
आयरन लेडी का लोहा
अब भली-भाँति ये मानती हैं।
है पथ प्रशस्त तुम्हारा
बस कुछ विश्राम कर लो
काम बहुत करने हैं तुमको
इन दिनों वह शक्ति संचित कर लो।

१०- अप्रतिम अध्याय

प्रीति समकित ने
लिखे मिलकर प्रेम की
अनमोल पुस्तक के
अनगिन पृष्ठ
जो बने
अप्रतिम अध्याय
जीवन के
साथ लिए संकल्प
बन गए लक्ष्य
साथ जीने के
विवाह दिन
बना हर दिन
उत्सव प्रेम का....
विवाह का ये उत्सव
लाए हर्ष उल्लास
बनाए संवेदनाओं का
अनुपम संसार
जहाँ नर्तन करें ख़ुशियाँ
हो सुरभित गृह-आँगन
लो शुभकामनाएँ
अनंत-अशेष।

११- तुम्हारा जीवन

तुम्हारा जीवन
उसमें आने वाली
चुनौतियों से दो-दो
हाथ करने का जीवट,
संघर्ष करने का माद्दा
परहितार्थ कुछ
कुछ न कुछ
करते रहने की
सबसे अलग सोच
तुम्हें औरों से
नितांत अलग बनाती है,
बीमारियों से जूझते हुए भी
उन बीमारियों से
समाज को सचेत/सजग
करने का काम
हर कोई
नहीं कर सकता,
ईश्वर भी तो जानता है
अन्तरा की इस
आयरन लेडी को
तभी लेता रहता है
कठिन परीक्षाएँ,
जब मन सशक्त है

तो तन को भी
सशक्त होना ही है,
समकित/तन्मय
जयति/जैनम और
पूरे अन्तरा परिवार का
स्नेह/प्यार/दुलार
इन सभी परीक्षाओं में
तुम्हें विजयी बनाएगा
मत सोचना कुछ भी
ये समय जल्दी ही जाएगा।

१२- सौभाग्य मेरा

सौभाग्य मेरा
जो जीवन में तुमसे
मिलना हुआ
अन्तरा परिवार में जुड़ कर
खिलना हुआ,
तुम जिसके भी जीवन में
जिस भी रूप में आई हो
उसके लिए
खुशियों के असंख्य द्वार
खोल आई हो,
आभार ईश्वर का
जिसने प्रीति के रूप में
हमें अनमोल उपहार दिया
और उसने
देखने/सोचने का
दृष्टिकोण बदल कर
छोटी सी एक बूँद में सबको
सागर थमा दिया।

१३- कुछ विश्राम कर लिया न?

कल फेसबुक पर
तुम्हारी मुस्कुराती हुई
छवि देखी और
अन्तरा के पटल पर
वीडियो सन्देश भी सुना,
सच बताओ
कुछ विश्राम कर लिया न
मेरी आयरन लेडी!
विवशता में छूटे
रास्तों पर शीघ्रातिशीघ्र
चलने को आतुर
अपनी योजनाओं को
गति देने को आतुर तुम
अलादिन का चिराग लगती हो
सरस्वती... जो बैठी है
तुम्हारी जिह्वा पर
उससे निकले शब्द
जब बोलों और लेखनी में
उतरते हैं तो जाने कितने
निराश मन प्राणवायु पा जाते हैं
छूट गए रास्तों पर
पुनः चल पड़ते हैं
भूल गए जो संगीत के सुर

पुनः गुनगुनाने लगते हैं,
अलौकिक जीवट है तुममें
न हारती हो
न हारने देती हो
तभी तो परिचित/अपरिचित
अपने/परायों सभी के दिलों की धड़कन हो।

१४- प्रीति से सीखें

जीवन में आने वाले
छोटे -छोटे पल
जिन्हें अधिकतर हम
छोड़ देते हैं
उन छोटे-छोटे पलों में
बड़ी खुशियाँ कैसे समेटी जाती हैं
यह प्रीति से सीखें।

छोटे-बड़े
किसी भी आयु के
उन्हें रिश्तों मे बांध कर
अपने परिवार सा कैसे
बनाया जाता है
यह प्रीति से सीखें।

कथनी-करनी में
कभी अन्तर नहीं होता
जो वाणी में है
वही अंतर्मन में होता
तालमेल कैसे करना हो इसका
यह प्रीति से सीखें।

व्याधियों- वेदनाओं के
भँवर जाल में उलझ कर भी
युद्धक्षेत्र-कर्मक्षेत्र में
हार नहीं मानते हुए

प्राणपण से कैसे डटे रहना है
यह प्रीति से सीखें।

मुस्कुराहट जब
खिलती है उसके अधरों पर
पता चल जाता है
अपनों के स्नेह की
डोरियों से बंधी वह
उर तल की गहनता से
खुशियों से अपना आँचल भर रही है

तभी तो
वह जब कहती है
मुझे सच में जीना आता है
उसकी इस बात को
स्वयं भी जीने का मन करता है
उसके जीने के हुनर को
सीख लेने का मन करता है

जीवन का मूलमंत्र
उसका एक ही है छोटा सा
अपनों और सपनों का
अलौकिक गठबंधन
इसे कैसे करना है
यह प्रीति से सीखें।

१५- अंतर्मन की गहराइयों से

पच्चीस वर्षों की
शानदार वैवाहिक यात्रा
जो समकित-प्रीति के
तन्मय/जयति/जैनम
और सारे अपनों के अनमोल
प्यार/दुलार/आशीर्वाद से
मित्रों की चुहल/नोकझोंक से
परिपूर्ण रही है,
संघर्ष/चुनौतियों/बाधाओं ने
जब-जब दरवाजे की
साँकल खटखटाई
ये सारे अपने
खड़े हो गए एक
लक्ष्मण रेखा खींच कर
उनसे लड़ने/बचाने/साथ देने के लिए,
यही तो तुम्हारे इस परिवार की
शक्ति/साहस/प्रेम/समर्पण की
मजबूत/मूल्यवान कड़ी है
जिसे पच्चीस साल पहले
अपनों के आशीर्वाद के साथ
प्रीति और समकित ने
मिल कर बनाया था,
विवाह की यह

अनुपम/अतुलनीय यात्रा
अपने/अपनों/मित्रों की
शुभकामनाओं के साथ
सदा चलती रहे...चलती रहे
नदी की तरह प्रवहमान रहे
लिखती रहे प्रीति-समकित की
युगल जोड़ी मिल कर
स्नेह/प्रेम/समर्पण के
नए-नए अध्याय
ढेरों आशीर्वाद के साथ
तुम दोनों के लिए
अंतर्मन की गहराइयों से
निकल रही यह कामना है।

१६- जोड़ते रिश्तों की कड़ियाँ

प्रीति-समकित के
विवाह की आज वर्षगाँठ
एक नये अध्याय ने
तुम्हारे अतुलनीय प्रेम के
द्वार पर दी है आवाज
तुम लिखती हो प्रेम
समकित लिखते हैं समर्पण
तुम बुनती हो स्वप्न
समकित भरते हैं उनमें रंग
तुम करती हो संघर्ष
समकित बनते हैं साहस
तुम हँसती हो खिलखिला कर
समकित सहेज लेते हैं
हँसी से झरे हरसिंगार
तुम हो तो हैं समकित
समकित हैं तो हो तुम
एक आत्मा एक प्राण
जोड़ते रिश्तों की कड़ियाँ
बाँटते खुशियाँ अविराम।

१७- उपलब्धियाँ

बना तीर्थ
हुआ साहित्य कुंभ
वारासिवनी में प्रथम बार।

कवि गोष्ठियाँ
उद्घाटन विमोचन सम्मान
बने कार्यक्रम की शान।

पूरा परिवार
सम्बन्धी मित्र परिचित
जुटते सभी बढ़ाते उत्साह।

प्रीति रचती
नित नयी रचना
प्रीत समर्पण आखरों से।

बनाए रिश्ते
सहेजे हृदय में
चल रही अनथक अविराम।

सदा सोचे
करना कुछ पृथक
उपयोगी बने सबके लिए।

१८- कुछ तो बात है

कुछ तो
बात है तुम में ऐसी
जो सबको अपनी
लगती हो

सागर जैसा
विशाल हृदय
बताओ तो कैसे
उसमें सबको सहेज
लेती हो

चंदा की
चाँदनी सी
उजली हँसी
कहाँ से लाकर
सबको बाँट देती हो

दोस्ती निभाने को
गिनती के पल
हाथ में लिए
हँसी-ठहाकों के बीच
इतना प्रेम लुटा देती हो

कर लेती हो वादे

जो लगते असंभव से
पूरा उन्हें करने को
स्वास्थ्य को एक ओर कर
स्वयं से भी लड़ जाती हो

सबके हृदयों में
बसे रहने का
क्या कोई जादू
है तुम्हारे पास?
छिपा कर रखा है
तो हमको भी बताओ न!

१९- विविध रंगों से

शब्दों में
जब रंग भरती है
खिल उठती हैं
सब साहित्य की विधाएँ,
बिखरते हैं
जब सेवा के रंग
उपेक्षित गौ माताएँ
पाने लगती हैं
नित्य सार-संभाल
दाना और पानी,
जब बढ़ती है
आध्यात्मिकता की ओर
तो सब कुछ छोड़
भक्ति के रंग में जाती है डूब,
रिश्तों के रंग में
रंगते ही नहीं मानव
पशु भी पाते हैं दुलार,
इतने विविध रंगों से सजा
व्यक्तित्व और जीवन है प्रीति का
अनुभव किया होगा
आप सब ने भी तो।

२०- झोंके

पूर्ण निष्ठा/
समर्पण से
कार्य करने के बाद भी
अविश्वास के झोंके
खिड़कियों से
प्रवेश कर ही जाते हैं
कुछ आवाजें
प्रश्न उठाती सुनाई देने
लगती हैं
तब न चाहते हुए भी
कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं
अपनी सभ्य भाषा को भी
थोड़ा कठोर
और तेज करना पड़ना है
ऐसा किया है और
आगे भी करना पड़ा तो करूँगी
उसका मुझे
किंचित भी दुख नहीं,
गलत न होने पर भी
गलत ठहरा कर
प्रश्न किये जायें
अनर्गल प्रलाप किया जाये
यह मुझे कदापि स्वीकार्य नहीं।

21- दिखी तुम

दिखी तुम
बहुत दिनों के बाद
दिल के दरवाजे खोलती
अपनी रचना के साथ

शांत पानी में
ज्यों फेंका कंकर
आलोड़ित हो गया तन-मन
लगता जैसे दर्द ने दी जाने किसे आवाज

रिश्तों की
गूँथती माला हर पल
सींचती प्रेम से करके अर्चन
हर शब्द बाँसुरी सा लगता ईश प्रसाद

दर्द बने
दवा किसी की
जब उतरते शब्दों में
बन कर किसी के मन के भाव

क्या तुम
रचती जादू कोई
गूँगा पाता वाणी उपहार
बधिर सुनने लगता हर बात।

22- प्रेम का मौसम

अप्रतिम प्रेम
और नोकझोंक से परिपूर्ण
सत्ताईस वर्षों की
यह वैवाहिक यात्रा
कितनी प्रेममयी है
यह तुम्हारे प्रेम से भरे शब्द
बताते हुए कानों में
मिश्री सी घोल जाते हैं
सुख-दुख में
प्रेम कितना सुंदर हो सकता है
धीरे से कह जाते हैं
जब-जब तुम प्रेम लिखो
तो इस तरह लिखना
हवा जब चले
तो उसकी सुगंध
सर्वत्र बिखेर आये
नदी जब बहे
तो उसकी लहरों के साथ
बंजर में प्रेम उगा आये
मौसम आते रहें जाते रहें
पर तुम्हारे प्रेम का मौसम
कभी बदल न पाये।

23- कैसी हो

मेरी आयरन लेडी
अच्छा लग रहा है
इन दिनों तुम्हारी
सक्रियता देख कर
आजकल मैं
तुम्हारी रचनाओं में
लगभग नित्य ही
तुमसे मिलती हूँ
पढ़ती/गुनती भावों में
डूबती-उतराती हूँ
प्रेम की जो नित
नयी परिभाषाएँ रचती हो
उन पर मुग्ध हो
मुस्कुराती हूँ
भावों का एक अनूठा
संसार आलोड़ित होता रहता है
तुम्हारे हृदय में
उसमें मथ कर
जिसे तुम शब्द देती हो
वह सबके मन की बात हो जाती है
क्या तुम यह जानती हो
तुम्हारे शब्द
न जाने किस-किस के लिए
आयुर्वेदिक/ऐलोपैथिक/होमियोपैथिक

और भी न जाने कौन-कौन सी पैथी की
औषधि बन जाते हैं
तुम रचती रहो
शब्दों का यह अलौकिक संसार
देती रहो मन-प्राणों को संजीवनी
बसी रहो सबके मनो-मस्तिष्क में
बाँधे रहो अपनी प्रीत के बंधन में
मन में यही बार-बार आये
तुमको हमारी उमर लग जाये।

२४- सदानीरा हो तुम

तुमने जब भी
मुझे आवाज दी
लगा वीणा के तार
झंकृत हो उठे,
जब-जब
चित्रों में दिखीं
एक नदी
तुम्हारे भीतर
हिलोर लेती
बहती दिखी
जिसे रुकना आता ही नहीं,
सदानीरा हो तुम
ऐसी ही रहना
पत्थरों को ढकेलती
बहती ही रहना।

ऊर्जा का अक्षय भंडार::प्रीति सुराना

विभा रानी श्रीवास्तव जी द्वारा सम्पादित " अथ से इति-वर्ण स्तम्भ" पुस्तक में शामिल रचनाकारों के रूप में प्रीति जी के नाम से परिचित हुई। बाद में उन्होंने अंतरा फ़ेसबुक पर मुझे जोड़ा। पर मैं बहुत कम फ़ेसबुक खोलती थी,सो ज़्यादा पता नहीं चला। फिर कभी-कभी देखती औरों की रचनाएँ,तो कभी-कभी मैं भी पोस्ट करने लगी। एक दिन लोकजंग के साहित्यिक पृष्ठ पर अपनी रचना देखी तो उत्साहित होकर और पोस्ट करने का प्रयास करती। दिल्ली के राघवेंद्र ठाकुर जी के द्वारा प्रकाशित पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में प्रीति जी से मिलना हुआ। वहाँ अंतरा समूह के ब्रजेश विफल जी, मनोज जैन मधुर जी, पिंकी परुथी जी से भी मिलना हुआ, चित्र भी लिए....और इस तरह फ़ेसबुक से शुरू हुआ सफर प्रत्यक्ष रूप में परवान चढ़ा। अंतरा वाट्सअप समूह से जुड़ कर रचनाकारों में क्या परिवर्तन आता है...ये हम सभी अंतरा से जुड़े रचनाकार अच्छी तरह समझ सकते हैं। अंतरा वेब पत्रिका के लिए लिखने को सबको प्रोत्साहित करना....ये सब काम करना और इतने सदस्यों के परिवार को साथ लेकर चलना....आश्चर्य नहीं तो और क्या है? आजकल लोग अपने पाँच-छह सदस्यों वाले परिवार को नहीं संभाल पाते....और यहाँ अंतरा का भरा-पूरा परिवार, जिसमें अपनापन है, नियम और अनुशासन है, साहित्य की विधाओं की विविधता है और सबमें एक-दूसरे से जुड़े रहने की इच्छा है.....और ये सब इसलिए है कि प्रीत का सागर बनी प्रीति ने इतने अपनेपन और प्यार से सबको लक्ष्य देकर आगे बढ़ते रहने के लिए इस तरह जोड़ा है कि सबएक संयुक्त परिवार की अनुभूति को जीते हुए रचनात्मकता में लीन हैं।

प्रीति जहाँ हैं वहाँ कोई उपेक्षित तो रह ही नहीं सकता,क्योंकि हरेक के साथ उनका कोई न कोई प्यारा सा रिश्ता बना हुआ है।यही उनकी ख़ूबी है जो उनकी रचनाओं में भी बख़ूबी परिलक्षित होती है।

एक और बात, जो मैंने प्रीति में देखी....वो है ध्वनि की प्रतिध्वनि देना। आप कभी भी उन्हें संदेश करें....उनका उत्तर सदा मिलेगा।यह गुण विरलों में होता है। बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीनारायण चतुर्वेदी, हरिवंशराय बच्चन और मेरे पिता में यह गुण थे।

और अंत में.....

प्रीति की प्रीत ने ऐसा
रचा प्यारा अंतरा परिवार
जिसमें अपनों का मेला
नहीं हर्ष का पारावार
वय छोटी हैं काम बड़े
कितने सपने अभी खड़े
कमर कसे खड़ी सदा
नित नवीन लक्ष्य गढ़े
प्रीति की प्रीत नदी में
एक वर्ष से बहते आए
आने वाले वर्षों में भी
अंतरा व प्रेम बढ़ता जाए

.....प्रीति आपको इतनी छोटी आयु में इतनी बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त करने के लिए अशेष हार्दिक शुभकामनाएँ। आपकी ये यात्रा अनवरत चलती रहनी चाहिए।

१- प्रीति सुराना का वारासिवनी से दिल्ली तक का सफर

वारासिवनी जैसे छोटे से गाँव में रहने वाली महिला प्रीति सुराना....जिसको उनकी बीमारी से उबरने के लिए उनके पति ने लेखनी हाथ में थमाई.. कब शब्द उसके अभिन्न साथी बन गए शायद उन्हें भी अच्छी तरह पता नहीं होगा। वहीं से उन्होंने फेसबुक के संसार में प्रवेश किया, वाट्सअप समूह बनाया और लिखने वालों से जुड़ती और उन्हें जोड़ती गई।

कार्यक्रमों में स्वयं जाना, जहाँ भी जाना वहाँ अपने प्रेम भरे स्वभाव से कुछ रिश्ते बना आना... अर्थात् सफर की शुरुआत हो गई थी। उनसे कई बार बातचीत के क्रम में जहाँ तक मुझे स्मरण है... अपनी पुस्तक के विमोचन का पहला कार्यक्रम अपने गाँव वारासिवनी में उन्होंने किया था, जिसमें पूरे गाँव को उन्होंने आमंत्रित किया था। सुबह से लेकर शाम होने तक गाँव का हर व्यक्ति कार्यक्रम में आया था और इस बात पर आश्चर्य किए बिना नहीं रहा था कि पुस्तक के लिए भी कार्यक्रम होता है। पूरे गाँव ने उनके इस पहले सफलता भरे कदम की जी खोल कर सराहना की थी।

हौसलों की उड़ान आसमान नापने के लिए तैयार थी। देखे गए सपने को पंख मिल गए थे। पति समकित सुराना और तीनों बच्चों का अकल्पनीय सहयोग प्रीति के कंटकाकीर्ण पथ की बाधाएँ दूर करने में लगा रहा और सपने ने गाँव की सीमा पार कर इंदौर शहर में अपने पंख फैलाए। सात साझा संग्रहों का सम्पादन कर उनका विमोचन और सम्मान समारोह इंदौर में हुआ। कुछ अच्छे और कुछ कटु अनुभव हुए। उन कटु अनुभवों ने देखे गए सपने के विस्तार की भूमिका लिखी।

यह भूमिका थी प्रकाशन के क्षेत्र में प्रवेश करने की। जब व्यक्ति यह सोच लेता है कि जब वो उस तरह से काम कर सकता है तो मैं अपने ढंग से नया रूप देकर अपना काम क्यों नहीं कर सकती... तब असम्भव से लगने वाले कार्यों की भूमिका तैयार होती है।

साझा संग्रहों में एक बड़ी राशि देकर मात्र चार-पाँच पृष्ठ मिलना और उसे अपनी पुस्तक भी न कह पाना... इस ओर भी उन्होंने सोचना आरंभ किया।

वाट्सअप समूह में रविवार को केंद्रीय रचनाकार विशेषांक होता था। उसमें रचनाकार का सम्पूर्ण परिचय सात रचनाओं के साथ प्रस्तुत किया जाता था और समूह से जुड़े रचनाकार उनकी समीक्षा करते थे।

शुभारम्भ इसी से किया गया और हर रचनाकार की "सृजन समीक्षा" नाम से सोलह पृष्ठों की पुस्तिका उसके परिचय, सात रचनाओं और चुनिंदा चार श्रेष्ठ समीक्षाओं के साथ बिना आइएसबीएन नम्बर के प्रयोग के तौर पर प्रकाशित की गई। रचनाकारों ने मुक्त मन से उसका स्वागत किया और उन्हें गर्व से यह कहने का अवसर दिया कि मेरी लघु पुस्तिका प्रकाशित हुई है जो साझा संग्रह नहीं, मेरी अपनी पुस्तक है।

सपने ने अपना मार्ग ढूँढ लिया था अब उस पर बढ़ते जाना था। अगली कड़ी में रचनाकारों की पुस्तकें आइएसबीएन नम्बर के साथ प्रकाशित की गई और सपने एक कदम आगे बढ़ कर भोपाल की धरा पर अपने कदम रखे। जहाँ सम्मान और विमोचन कार्यक्रम तो था ही, रचनाकारों की बत्तीस पृष्ठों की स्वतंत्र पुस्तकें थी, वुमन आवाज के तहत ५५ महिलाओं की सोलह पृष्ठों की पुस्तिका भी थी। कार्यक्रम में शामिल होने ४० महिलाएँ अपने घर के सदस्यों के साथ और कुछ अकेली ही सहभागिता करने पहुँची थीं। डायरी तक सीमित

लेखन ने पुस्तक के रूप में अपनी उड़ान भरी और उन स्वतंत्र पुस्तिकाओं की महिला रचनाकारों ने अपनी एक स्वतंत्र पहचान के उल्लास को अनुभव किया। भोपाल के उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मलय जैन, सहायक पुलिस महानिरीक्षक, भोपाल और विशिष्ट अतिथि अंतर्राराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अंजुम रहबर आई थीं

काव्य गोष्ठी का दौर भी चला था। कार्यक्रम की गूँज दूर-दूर तक पहुँची। लोगों को सोचने पर विवश होना पड़ा कि कुछ तो ऐसी बात है प्रीति सुराना में जो न आराम करती है न करने देती है। इसमें डा० अर्पण जैन 'अविचल' और शिखा जैन के सहयोग और कार्यों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वे उनका दाहिना हाथ बन कर हर कदम पर उनके साथ थे। मातृभाषा उन्नयन संस्थान, हिंदी ग्राम हो या अन्तरा शब्दशक्ति... सभी एक-दूसरे के सहयोगी बने हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा तक पहुँचाने के लिए कटिबद्ध हैं।

प्रीति के सपने ने एक नया मुकाम तय करने का संकल्प लिया.... वो था भोपाल की धरा से आगे देश की राजधानी में विमोचन और सम्मान समारोह करने के साथ अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के साथ विश्व पुस्तक मेला २०१९ में अन्य प्रकाशनों के साथ आत्मविश्वास से कदम रखना।

कार्यक्रम में डा० वेद प्रताप वैदिक, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, अतुल प्रभाकर, उर्मिला माधव के कर-कमलों द्वारा ९१ पुस्तकों का विमोचन हुआ। देश के विभिन्न भागों से आए लगभग सौ साहित्यकारों का सम्मान हुआ।

कार्यक्रम का सफल संचालन कवि दिनेश देहाती ने किया।

कार्यक्रम में डा० प्रीति सुराना, समकित सुराना, डा० अर्पण जैन 'अविचल' के अतिरिक्त नीरजा मेहता, मीनाक्षी सुकुमारन, कुसुम सिंह

'अविचल', किरण मिश्रा, आरती तिवारी, पिंकी परूथी, ब्रजेश शर्मा 'विफल', हेमंत बोर्डिया, किरण मोर, पूनम कतरियार, प्रेरणा परमार, वंदना दुबे, डा० भारती वर्मा बौड़ाई, रिखब चंद राँका 'कल्पेश', रक्षित दवे, वर्षा अग्रवाल, सुनीता लुल्ला, वसुंधरा रॉय, मृदुल जोशी, दिनेश देहाती, मनोरमा रतले, अर्चना कटारे, अलका रागिनी आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की बागडोर प्रीति, अर्पण जैन, समकित सुराना, शिखा जैन के साथ पिंकी परूथी, पूनम कतरियार आदि ने सम्भाली तो सम्मान होने के बाद सम्बन्धित रचनाकार को उनकी पुस्तकें देने का दायित्व राकेश आनंद बौड़ाई ने सम्भाला।

हर रचनाकार इन अभूतपूर्व पलों को अपने मोबाइल द्वारा चित्रों के रूप में सहेजने में मनोयोग से व्यस्त थे।

अभी कल्पना के एक रूप को साकार होते हुए देखना शेष था। अन्तरा के साहित्यकारों ने विश्व पुस्तक मेले में अपनी पुस्तकें स्टॉल पर लगी होने की शायद ही कल्पना की होगी। अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन ने प्रगति मैदान में लगे विश्व पुस्तक मेला २०१९ में हॉल १२ ए, स्टॉल ७९ में अपने सभी रचनाकारों की पुस्तकें स्टॉल में प्रदर्शित कर रचनाकारों को यह अभूतपूर्व सुख, प्रसन्नता, गर्व और गौरव अनुभव करने का रोमांचित करने वाला अवसर दिया... अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से प्रकाशित होने वाला हर रचनाकार यह गर्व से कह रहा है कि उसकी पुस्तकें भी विश्व पुस्तक मेले में हॉल १२ ए , स्टॉल ७९ में लगी हैं।

वारासिवनी से दिल्ली का ये सफर आसान रहा हो, ऐसा नहीं है। अपने स्वास्थ्य से जूझते हुए, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाते हुए, कार्यक्रम करने में होने वाले आर्थिक नुकसान को वहन करते हुए डा०

प्रीति सुराना अपने परिवार, डा० अर्पण जैन, शिखा जैन और अंतरा सहयोगियों, सारथियों के साथ वारासिवनी से दिल्ली तक पहुँची हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा कि अपने सपने के साथ सभी अन्तरा सहयोगियों के सपनों को उड़ान का हौसला और आत्मविश्वास प्रदान करते हुए प्रीति सुराना भविष्य में अपना कोई कार्यक्रम भारत से बाहर दूसरे देश की धरती पर करें... क्योंकि अन्तरा केवल भारत में ही सिमट कर रहने वाली नहीं है।

२- अन्तरा शब्दशक्ति के साथ मेरा अनुभव

प्रीति अन्तरा शब्दशक्ति है या अन्तरा शब्दशक्ति प्रीति है कहना बहुत कठिन है। ये दोनों इस तरह एक-दूसरे में समाए हुए हैं कि इनके लिए "एक प्राण एक शरीर" कहना मुझे अधिक उपयुक्त लगता हैं। यह एक ऐसे परिवार का रूप ले चुका है जहाँ प्रेम, स्नेह, विश्वास, त्योहार....सभी रंग इस मंच रूपी परिवार में अठखेलियाँ करते दिखेंगे।

अंतरा शब्दशक्ति से जुड़ना एक संयोग रहा मेरे लिए। जुड़ कर इसका अभिन्न अंग बनना उससे भी अधिक दुर्लभ संयोग बना मेरे लिए।

याद नहीं आता इससे जुड़े कितने दिन हुए!
लगता है बरसों की पहचान है इससे।
पर वास्तविकता इससे नितांत अलग है।

दो वर्षों के इतने अल्प समय में इसने अपने पंखों को फैला कर जो उड़ान भरी वह देखते-देखते अपनी कर्मठता, अपने कौशल, अपने नित कुछ न कुछ नया करने की धुन के चलते विभिन्न आयामों के साथ आभासी मंच की एक सशक्त पहचान बन कर शान से, स्वाभिमान से अपनी अमिट गाथा रचने-लिखने में लीन है।

जो इससे जुड़े उनकी सृजनात्मकता के रंगों से अंतरा शब्दशक्ति का मंच नित सृजन के फागुनी रंगों से रंगा जैसे रोज होली खेलता है।

ऐसा नहीं कि यहाँ कोई नियम नहीं। इस परिवार के सभी सदस्यों को पता है कि किस दिन साहित्य की किस विधा में अपने सृजन के रंगों को बिखेरना है। यहाँ सृजन है तो समीक्षा भी, शिक्षण

भी है साथ ही प्यार के साथ मिठास लिए उड़ती हुई डाँट की हल्की सी फुहारें भी। हर विधा साहित्य की उतरती है इसके मंच पर, जो सृजनकर्ताओं को निरंतर अभ्यास से निखारती हुई एक पहचान देती हुई चल रही है। एक से शुरू हुई यह यात्रा आज एक परिवार का रूप ले चुकी है और फ़ेसबुक, वहाट्सएप, वेब मैगज़ीन, वेबसाइट के आयामों से आगे प्रकाशन के संसार में भी क़दम रख चुकी है जिसमें मंच से जुड़े साझा प्रकाशनों से लेकर व्यक्तिगत पुस्तकों के प्रकाशन और उनके विमोचन का प्रावधान भी है। ई बुक, नियमित गतिविधियों के बीच में से विभिन्न अवसरों पर हुई लेखन गतिविधियों के बीच से बने साझा संग्रहों के सरप्राइज उपहार भी इसके सदस्यों को प्रसन्नता के रंगों से सराबोर करते रहते हैं। अगर यह कहा जाए कि अन्तरा शब्दशक्ति स्नेह, प्रेम, विश्वास और आत्मीयता का भंडार है तो गलत नहीं होगा। एक बार जो यहाँ जुड़ा तो रिश्तों की डोर में बंध जाता है। जो टूटता है तो अपने ही भ्रम, गलतफहमियों, अहं और गलत व्यवहार के चलते ही टूटता है।

वरिष्ठों का सहयोग, नयों का उत्साहवर्धन इस मंच की ऐसी विशेषता है जो हिंदी को श्री संपन्न तो कर ही रहा है, समर्पित भाव से हिंदी की विकास यात्रा में अपना श्रेष्ठ देता हुआ बढ़ रहा है।

डा० प्रीति सुराना के देखे सपनों से आरंभ हुई ये यात्रा परेशानियों के कठिन दौर से भी जब-तब दो-चार होती है पर इन सपनों को पूरा करने के लिए जो समर्पण है वो रुकना जानता ही नहीं, तभी तो उनके साथ समकित सुराना, उनके तीनों बच्चे, अन्तरा शब्दशक्ति परिवार के सभी सदस्य, जिन्हें मुझे अन्तरा सारथी कहना अधिक अच्छा लगता है, ऐसे अन्तरा सारथियों के अतुलनीय प्रयासों और निस्वार्थ समर्पण से काल के कपाल पर एक नया इतिहास रचने को कटिबद्ध है। हिंदी

साहित्य में भक्तिकाल को साहित्य का स्वर्णयुग कहा गया है तो अब पुनः अंतरा शब्दशक्ति हिंदी का दूसरा स्वर्णिम युग लिखने की ओर प्रवृत्त है... इसमें किंचित भी संदेह की गुंजाइश नहीं है।

जब एक पुस्तक विमोचन और सम्मान कार्यक्रम करने में हुए कटु अनुभवों के कारण प्रीति सुराना ने स्वयं पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में उतरने का मन बनाया तो यह भी अन्तरा शब्दशक्ति के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना ही कही जाएगी।

पुस्तक प्रकाशित करवाना कम से कम मुझे तो बहुत कठिन काम लगता था। जब पापा थे तो कभी जाना ही नहीं कि इसमें कितना श्रम लगता है, कितनी बार प्रूफ पढ़ना पड़ता है, प्रकाशक और प्रेस के कितने चक्कर काटने पड़ते हैं और तब भी मनचाहे समय पर पुस्तक नहीं मिल पाती थी। कई बार प्रूफ देखने-पढ़ने के बाद भी अशुद्धियाँ दिखाई दे जाती थी। पापा के उस पार के संसार में चले जाने के बाद जब मैंने उनकी एक पुस्तक प्रेस में दी तो कितने चक्कर काटने के बाद पुस्तक हाथ में आई.. यह मैं ही जानती हूँ।

प्रीति ने अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन में लेखक को पुस्तक की पूरी सामग्री टाइप कर या करवा कर वर्ड फाइल में ईमेल से भेज देने की सुविधा प्रदान की। उसके बाद लेखक निश्चिंत। पुस्तक निश्चित समय पर उसके हाथों में पहुँचती है। यह कितनी बड़ी सुविधा और निश्चिंतता है एक लेखक के लिए... यह प्रकाशकों, प्रेस वालों के यहाँ चक्कर काट कर थक चुका लेखक ही समझ सकता है।

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की स्वामिनी प्रीति सुराना ने तो प्रकाशक और लेखक के आपसी रिश्ते को आत्मीयता प्रदान कर विश्वसनीयता को भी प्रगाढ़ किया। यहाँ मैं अपना अनुभव देना चाहूँगी जो मेरे हृदय के बहुत समीप है। मैं अपने बेटे के जन्मदिन पर उसके

लिए समय-समय पर लिखी अपनी कविताओं को पुस्तक रूप में प्रकाशित कर उसे उपहार देना चाहती थी। पुस्तक का पूरा मैटर प्रीति को भेज कर अपनी इच्छा बताई। उन्होंने कहा... दी! आप निश्चिंत रहें।जन्मदिन पर आप अपनी पुस्तक बेटे को उपहार में दे रहीं हैं। मुझे एक दिन पूर्व पुस्तक मिल गई थी और प्रीति ने स्वयं फोन करके यह जाना कि पुस्तक मुझ तक समय पर पहुँची या नहीं। मेरी बेटी के जन्मदिन पर भी प्रतीक्षित पुस्तक प्रकाशित करके उन्होंने मुझे ठीक समय पर पहुँचाई।तो यह है वादा करके उसे पूरा कर अपने लेखक को विश्वास प्रदान करने की प्रीति और अन्तरा प्रकाशन की उत्तम नीति.. जो उसके लेखक को उससे एक बार जुड़ जाने पर टूटने का, दूर जाने का अवसर नहीं देती।

अन्तरा शब्दशक्ति समूह से जुड़ने से लेकर अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़ने तक, मैं प्रकाशन आरंभ होने के दिन से ही अपनी पुस्तकों के प्रकाशन से इससे जुड़ी हूँ, के अपने अनुभवों पर दृष्टि डालती हूँ तो एक सुखद गर्व मिश्रित अनुभूति से भर उठती हूँ।इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। जो अनुभव किया वही बताने का प्रयास मैंने यहाँ किया है।

प्रीति सुराना के सपनों का अन्तरा शब्दशक्ति समूह और प्रकाशन अपनी नित नयी योजनाओं के द्वारा अपने पंख खोल-फैला कर उड़ान भर रहा है। यह तो एक आंदोलन के रूप में काम करते हुए ऊँचे लक्ष्य की ओर अग्रसर है। वो दिन अब अधिक दूर नहीं है जब यह एक अद्वितीय इतिहास रचेगा।

अन्तरा-शब्दशक्ति
विमोचन एवं

सम्मान समारोह

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
विमोचन एवं सम्मान- २०१९

नाम - **डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई**

जन्म - देहरादून, उत्तराखंड में

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड.,
डी फिल (शोध द्वारा)

प्रकाशन - पुस्तकें-22, कविता संग्रह-16,
आलोचना-01, सृजक सृजन समीक्षा-01,
लघुकथा संग्रह-02, आलेख संग्रह-01,
विचार संग्रह-01, साझा संग्रह-300,

पता - 95, ब्लाक-H, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर,
डाकघर-नेहरू ग्राम, देहरादून-248001 उत्तराखंड

मो. - 9759252537

ईमेल - bharati.bourai007@gmail.com

सम्मान - वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण (पूर्व रक्षा मंत्री) द्वारा हिन्दी सेवा सम्मान के साथ अन्तरा शब्दशक्ति और साहित्य संगम संस्थान और वर्तमान अंकुर द्वारा कई सम्मान प्राप्त।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

978-93-94528-33-8